13.08.2020 B.A. Part-I
12.08.2020 Economics (Hons) Paper-I
National Income - IV.
"Macro Economics."

Dr. Bipin Kumar
Professor, Deptt. of Economics.
R.R.S. College, Mokama.
PPU, Patna.

प्रश्न : राष्ट्रीय आय के महत्व का विश्लेषण करें। (Analyse National Income)

उत्तर : इससे पूर्व हमने 'राष्ट्रीय आय' की परिभाषा, अवधारणा, विशेषता एवं इसकी माप के विभिन्न विधियों का भारत देश के सन्दर्भ में आलोचनात्मक एवं वृहत अध्ययन किया। अब यहाँ हम भारतवर्ष में राष्ट्रीय आय के प्रमुख महत्वों की चर्चा करेंगे:

(1) आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले तत्व (Factors Determining Economic Growth): किसी भी देश के आर्थिक विकास में आर्थिक विकास की दर कई महत्वपूर्ण तत्वों पर निर्भर करती है। इन तत्वों में कुछ आर्थिक होते हैं और कुछ अनार्थिक। पूँजी निर्माण की दर (Rate of capital formation) आर्थिक विकास के मद्देनजर (दृष्टिकोण से) एक महत्वपूर्ण तत्व मानी जाती है। इसके लिए, उत्पादन, उपभोग, बचत इत्यादि के सही, पर्याप्त एवं विश्वसनीय समंकों का होना आवश्यक माना गया है।

(2) करदान क्षमता (Taxable capacity): देश की अर्थव्यवस्था में 'करदान क्षमता' की माप का प्रमुख आधार भी राष्ट्रीय आय को ही माना गया है।

(3) विभिन्न क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study of different sectors of the Economy): इसके अंतर्गत देश के राष्ट्रीय आय संबंधी समंकों के आधार पर अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। सामान्यतया, उदाहरण के लिए भारत देश में राष्ट्रीय आय का प्रमुख स्रोत कृषि क्षेत्र को माना गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में, जो आर्थिक प्रगति हो रही है उसमें कृषि क्षेत्र के योगदान का अन्य क्षेत्रों के योगदान से तुलनात्मक अध्ययन राष्ट्रीय आय के समंकों के आधार पर किया जा सकता है।

(4) आर्थिक प्रगति का सूचक (Index of Economic Progress): किसी देश की आर्थिक विकास या आर्थिक प्रगति की माप राष्ट्रीय आय के आधार पर ही किया जा सकता है। जहाँ,

आर्थिक प्रगति की दर $= \frac{\Delta Y}{Y}$, जहाँ,

ΔY = राष्ट्रीय आय में वृद्धि,

Y = प्रारंभिक राष्ट्रीय आय।

(5) आर्थिक नियोजन एवं निर्धारण नीति (Economic Planning and Policy Formulation): किसी देश की अर्थव्यवस्था

सीमित साधनों को पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति की दृष्टि से प्राथमिकता के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में बाँटना ही 'आर्थिक नियोजन' (Economic Planning) कहा जाता है। इसमें अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों के विकास, कुछ खास वर्गों की जरूरतों या आवश्यकताओं के आधार पर न होकर देश की जरूरतों और आवश्यकताओं के आधार पर होता है। इस दृष्टिकोण से 'नीति निर्धारण' के कार्य में राष्ट्रीय आय के समंकों का काफी उपयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय आय के उपरोक्त विभिन्न महत्वों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यह देश के आर्थिक विकास के क्षेत्र बड़ी ही अहम एवं महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।